Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 1, January-2019, ISSN 2230-7540

जैन धर्म में पर्यावरण संदेश

Subhash Kumar*

Research Scholar, University of Ancient Indian, Department of History, Archeology and Culture, Lahn Mithila University, Kameshwaranagar, Darbhanga

सार - आज अखिल विश्व में पर्यावरण-संरक्षण की अभूतपूर्व समस्या विद्यमान है। यह मानव अस्तित्व के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। ज्ञातव्य है कि पर्यावरण का सम्बन्ध न केवल विश्व संस्कृति, परम्परा, साहित्य, कला, अर्थनीति, राजनीति, वाणिज्य नीति एवं समाज से बल्कि विश्व के प्राणी मात्र के अस्तित्व से जुड़ा हुआ है। यही कारण है कि विश्व के समस्त संस्कृतियों, परम्पराओं के अधिकांश प्रबुद्धजनों, चिन्तकों एवं सरकारो का पर्यावरण की शुद्धता, अक्षुण्णता एवं संरक्षण पर गहराई पूर्वक सार्थक विचार किया गया है। मगर भारतीय संस्कृति में विशेषकर जैन संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण एवं अक्षुण्णता पर केवल अनुचिन्तन ही नहीं किया गया है अपितु, इसका मानवी व्यवहारिक जीवन में मूर्तरूप देकर इस दिशा में अभूतपूर्व सार्थक प्रयास किया गया है। इस प्रकार जैन धर्म प्रारंभ से ही पर्यावरण की शुद्धता बनाये रखने में सतत् सचेष्ट एवं जागरूक है।[1]

----------X----------

पर्यावरण की व्युत्पत्ति करते हुए बतलाया गया है कि "पर्यावरण" दो शब्दों के मेल से बना है- "परि" + "आवरण", 'परि" का अर्थ परितः यानि चारो ओर और "आवरण" का अर्थ है- आवृत्त करना। इस प्रकार जो चारों ओर से आवृत करें, वह पर्यावरण है। व्यापक अर्थ में पर्यावरण का अभिप्राय जीव-सृष्टि एवं वातावरण का पारस्परिक आंकलन है, जिसमें सजीव प्राणी, आबोहवा, भूगर्भ और आस-पास की परिस्थिति विषयक विज्ञान का समावेश होता है। इसमें केवल मनुष्य, पशु-पक्षी, जीव-जन्तु, वनस्पति और अपार-अनन्त सूक्ष्म जीवन-सृष्टि का ही नहीं, अपितु समस्त ब्रह्मण्ड, तारकवृन्द, सूर्यमण्डल तथा पृथ्वी के आस-पास के सूर्य, चन्द्र, ग्रह, गिरि, कन्दरा, सरिता, सागर, झरने, वन-उपवन, वृक्ष, वनस्पति, भूपृष्ठ एवं जल-पृष्ठ सहित पंचभूत महातत्त्वों का भी समावेश होता है। पर्यावरण का अत्यन्त गहरा सम्बन्ध प्रकृति से है। प्रकृति अपने कार्य में अत्यधिक उदार है, क्योंकि सम्पूर्ण सम्पदा प्राणिमात्र के उपभोग एवं उपभोग के लिए है। ज्ञातव्य है कि मानव का जीवन प्रकृति के उपभोग से ही विकसित एवं परिवर्द्धित होता है। यह धुरव सत्य है कि जो मनुष्य प्रकृतिका समुचित उपयोग करता है, परन्तु ऐसा दृष्टिगत होता है कि मनुष्य मानसिक विकृति के कारण प्रकृति में अत्यधिक दोहन तथा उन्मुक्त भोग करता है, जिसके कारण प्रकृति में असंतुलन पैदा हो जाता है। परिणामस्वरूप पृथ्वीमण्डल पर अतिवृष्टि, अनाविष्ट, सुखाड़, बाढ़, भूचाल, एवं प्रचण्डगर्मी, ठण्डक आदि नवीन समस्यायें उत्पन्न हो जाती है, क्योंकि प्राणी या प्रकृति मात्र के बीच संतुलित वातावरण बनाये रखना ही पर्यावरण संरक्षण है।

जबकि यह सर्वविदित है कि मानव के विकृत मस्तिष्क के कारण समस्त पृथ्वी मंडल में गंदगियों का अम्बार लग गया है, जिससे पर्यावरण दूषित हो गया है।[2] जैन चिन्तकों द्वारा प्रदुषण को दो भागों में वर्गीकृत किया गया है- 1. भौतिक प्रदुषण और 2. अभौतिक प्रदुषण।[3]

भौतिक प्रदुषण के अन्तर्गत वायु, जल, भूमि, खाद्य, ध्वनि एवं अन्तरिक्ष प्रदुषणों का समावेश किया गया है। इन भौतिक प्रदुषणों का सर्वांग सर्वेक्षण भारतीय पर्यावरण इंजीनियरिंग शोध संस्थान द्वारा किया गया है, जिसके अनुसार प्रदुषण और उसके कारणों पर प्रकाश डाला गया है, जिसका सार इस प्रकार हैः-

सम्पूर्ण विश्व में वायु का प्रदुषण परिव्याप्त है जिसका प्रमुख कारण कल-कारखानों, कार-स्कूटर, बस, रेल, हवाई जहाज, भोजन बनाने के काम में आनेवाली लकड़ी, कोयला, गैस आदि से निकलने वाला धुँआ तथा कारखानों से रिसने वाली जानलेवा जहरीली गैसे हैं। इन कारण से सम्पूर्ण वायुमण्डल में कार्बल-डाइऑक्साइड का अनुपात अत्यधिक हो जाता है, इसके परिणामस्वरूप वायु प्रदुषित हो जाती है।

दूसरा महत्वपूर्ण प्रदूषण जल प्रदूषण है। सर्वेक्षण से यह अभिज्ञात हुआ है कि भारत में उपलब्ध समस्त जलराशि का 70 प्रतिशत जल प्रदूषित है। इस प्रदूषण का प्रमुख कारण बस्तियों, ग्रामों, नहरों से निकला मल, गन्दा पानी, कारखानों

www.ignited.in

द्वारा बहाया गया प्रदूषित जल, कचरा, मछलियों का व्यापक संहार एवं अन्य जलचरों के निवास स्थान का विनाश है।[4]

तीसरा महत्वपूर्ण प्रदूषण खाद्य प्रदूषण है। विश्व के अन्य देशों सहित भारत में भी उपलब्ध खाद्य-पदार्थों में प्रदूषण परिव्याप्त है, जिसका प्रमुख कारण अनाज संरक्षण हेतु अनाज की बोरियों, अन्य पात्रों में कीटनाशक पाउडर का प्रचुर मात्रा में उपयोग, खेत में कीटनाशक दवाईयों का उपयोग, बाजार में बेचे जाने वाले मशालें मिलावट किये गये आँटे तथा अन्य खाद्य पदार्थ है।

पशु-पक्षी एवं मानव इन सभी को सुरक्षित रखने का अद्भूत प्रयत्न किया था। जैन धर्म वनस्पति कार्य आदि एकेंद्रिय जीवों की रक्षा करने का हिमायती और पक्षधर है, मनुष्य और प्रकृति को समान गुण सम्पन्न माना गया है और इसकी व्याख्या करते हुए बताया गया है कि दोनों जन्म लेते हैं, वृद्धि करते हैं। दोनों जल ग्रहण करते हैं। यही कारण है कि जैनधर्म में वनस्पति कार्य आदि प्राणी को भी नष्ट करने का निषेध किया गया है।[5]

जैनधर्म में "अपरिग्रहवाद" मूलभूत सिद्धान्त है जो पृथ्वी, वायुमंडल के साथ ही आत्मामंडल को प्रदूषित होने से बचाता है। इसे इच्छा परिणाम भी कहा गया है। वस्तुओं का उपभोग करना अर्थात् आय की अपेक्षा व्यय कम-से-कम करना ताकि पर्यावरण संरक्षित रहे। पर्यावरण को शुद्ध, अक्षूण्ण बनाये रखने में सतत् योगदान दिया है, जैस- अगर एक दातुन के लिए एक टहनी की आवश्यकता है तो बड़ी मोटी टहनी या डाली तोड़ने पर क्या वनस्पति-कायिक जीवों के प्रति अतिक्रमण, अन्याय, हिंसा, नहीं? स्नान करने के लिए यदि एक बाल्टी पानी पर्याप्त है तो पूरा नल खोलकर पानी बहाना क्या जल प्रदूषण नहीं है। पृष्ठ पर दो लाईन लिखकर पृष्ठ यों ही छोड़ देना क्या मृदा आदि प्रदूषणों को बढ़वा देना नहीं है? कागज बनाने के लिए कितने कारखाने लगाने पड़े? कितने जंगलों को काटना पड़ा? इन सभी बातों को ध्यान में धारण करने, संयमित एवं मितव्ययी जीवन जीने के लिए भगवान महावीर ने कहा था कि सभी चेतन या अचेतन पदार्थों की अपनी स्वतंत्र सत्य है। सभी का अपना-अपना अस्तित्व है। इसलिए छोटे-से-छोटे जीवन के अस्तित्व को स्वीकार करो, क्योंकि जो दूसरे के अस्तित्व को स्वीकार करता है, वही अपने अस्तित्व को भी स्वीकार करता है। अतः मनुष्य को अपने आवश्यकतानुसार वस्तुओं पर अहिंसा भावनापूर्वक उपयोग कर निश्परिग्रही होना चाहिए ताकि वह धन-संचय की होड़, मिलावट, बलात्कार, उत्पीड़न हत्या आदि मानसिक प्रदूषण से निजात पा सके, जिसके फलस्वरूप अखिल विश्व में समस्त प्राणियों के बीच संतुलन बना रह सके। इस प्रकार पर्यावरण कई अनुण्णता शुद्धता बने रखने में अपरिग्रहबाद संजीवनी बूटी ही है।

जैन संस्कृति का "आहार" के क्षेत्र में भी अभूतपूर्ण योगदान है। आहार मूलतः दो प्रकार हैं- 1. मांसाहार और दूसरा 2. शाकाहार। जैन संस्कृति में मांसाहार को हेय और शाकाहार को उपादेय माना गया है। मांसाहार को हेय इसलिए माना गया है कि इसमें पशु-पक्षियों का हनन होता है। जबकि पशु-पक्षी जल को शुद्ध एवं पवित्र बनाये रखते हैं। इनमें से कुछ पशु-पक्षी जल को शुद्ध करते हैं तो कुछ वृक्षों, वनों की रक्षा करते हैं। वनों की रक्षा करने से हमें शुद्ध वायु मिलती है। पर्याप्त वर्षा होती है, भू-स्खलन नहीं होता है, इसके साथ पृथ्वी की उर्वरता भी बनी रहती है, जिससे प्रकृति में संतुलन रहता है। शाकाहारी को उपादेय इसलिए माना गया है कि किसी भी पशु-पक्षी का हनन नहीं होता है, अहिंसा धर्म का पालन होता है। शाकाहारी के पीछे भी पर्यावरण की चेतना छिपी हुई है। अतः शाकाहारी पर्यावरण में सर्वथा बहूपयोगी है।[7]

जैन संस्कृति में मानसिक प्रदूषण को सबसे बड़ा प्रदूषण माना गया है। इसके निवारण हेतु पाँच-अणुव्रत8, महाव्रत9, समिति10, गुप्ति11, प्रतिक्रमण12, तप-त्याग, व्रत आदि नियमों का सम्यक पालन आवश्यक है। पाँच अणुव्रतों में अहिंसा द्वारा प्राणी मात्र के प्रति मैत्री, दया, सत्य द्वारा कथनी-करनी में एकरूपता, अस्तेय द्वारा शोषण का विरोध और दूसरे के अधिकारों का रक्षण ब्रह्मचर्य द्वारा आत्मा संयम और भक्ति का संचय तथा अपरिग्रह द्वारा ममत्व-विसर्जन और सेवा की भावना का अभ्यास किया जाता है, तीन गुण व्रतों में भोगवृत्ति को सीमित करने के लिए ही अन्य दिशाओं में स्थित देशों पर अधिकार न करने, पदार्थों के उपभोग-परिभोग में, मर्यादा करने तथा निश्प्रयोजन कोई भी न करने का नियम ग्रहण किया जाता है। इन तीन गंणवत्ता13 को संवर्द्धत संरक्षित करने के लिए चार शिक्षाव्रतों14 का पालन किया जाता है। ताकि दूसरे के अधिकारों की रक्षा हो, संलेखना, समिति, गुप्त, सामाजिक, प्रतिक्रमण आहार चर्या, उपकरणों का उपयोग एवं मलमूत्र त्याग आदि क्रियाओं के द्वारा प्रबुद्ध साधक किसी भी प्राणि को बाधा न पहूँचाते हुए एवं समस्त अंतरंग-बहिरंग वैभाविक विकृतियों को नष्ट करते हुए पर्यावरण संरक्षण में अपनी अहम भूमिका निभाते हैं।

जैनधर्म एवं संस्कृति में श्रमणाचार एवं श्रमणाचार द्वारा पर्यावरण को सुरक्षित एवं सबंर्द्धित रखने के लिए प्रत्येक कार्य-कलाप के साथ संयम, विवेक जुड़ा हुआ है। पर्यावरणीय समस्याओं के मूल में मानव प्रवृतिगत दोष विद्यमान है और उनका परिष्कार ही इस समाधान का सफल सूत्र है। पर्यावरण

www.ignited.in

का अत्यन्त प्रभावशाली अंग होने के कारण मानव के विचार एवं व्यवहार का पर्यावरण के समस्त तत्त्वों पर प्रभाव पड़ता है, अतः मानव की पर्यावरण चेतना का जागृत रहना आवश्यक है, जिससे वह अपने क्रिया-कलापों के दूरगामी परिणामों का पूर्वज्ञान प्राप्त कर सके और पर्यावरण-संतुलन के लिए अपना दायित्व निभा सके।

आदर्श वत्र्तमान युग के परिग्रह वृत्ति के कारण विलुप्त हो रहे हैं। पर्यावरणीय समस्या के समाधान के लिए पर्यावरण चेतना के अवरोधक के रूप में "परिग्रह" का निवारण ही एकमात्र उपाय है।

पर्यावरण-संतुलन स्थापित करने के लिए औद्योगीकरण, प्रोद्योगिक एवं भौतिक प्रगति का पूर्ण निषेध अव्यावहारिक ही नहीं, असंभव भी है आज अभीष्ट यही है कि लोभ और असंयम को नियंत्रित करके विज्ञान प्राकृतिक व्यवस्था में न्यूनतम व्यवधान और अधिकतम सामंजस्य के लक्ष्य की पूत्रि के लिए प्रयत्नशील हो। इस दिशा में अपरिग्रह को ही अपनाना होगा।

जैन यति का जैन अनगार जो अपने शरीर से भी निसंग है, ममत्वहीन है, यह सर्दी-गर्मी, वर्षा में कभी पर्यावरण को अपने अनुकूल बनाने या बनवाने की जरूरत नहीं करता, बल्कि शरीर के प्रति ममत्वहीनता के कारण पर्यावरण से अनुकूलन कर लेता है, यह किसी प्रकार की विषयाभिलाशा का आन्तिरिक परिग्रह भी नहीं रखता। वह अपने पास एक मयूरपृच्छी व एक कमण्डलु रखता है। जिसका अपना कोई स्वामित्व नहीं होता है।

जैन धर्म मानवता की गहराई और उसकी क्रियान्वित पर बल देता है। यही अहिंसा का मर्म है और यही संस्कृति का मूल। अहिंसा ही पर्यावरण का आधार है। संयम, समता, करूण आदि मूल्य पर्यावरण के संरक्षक के लिए उपयोगी है। अहिंसा का प्रतिष्ठापन जैन धर्म एवं जीवन पद्धति में सर्वोपरि है। जैन संस्कृति ही पर्यावरण की समग्रता को समाहित किये हुये हैं और उसके पोषण करने में सहभागी बनी हुई है।15

सन्दर्भ ग्रन्थों की सूचीः-

01. प्रो. ऋशभ चन्द्र जैन (स0) - वैशाली इंस्टिच्यूट रिसर्च बुलेटिन नं0-20 प्रकृत, जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, प्रथम संस्करण 2008 वसोकुण्ड मुजफ्फरपुर, पृ0-75.

02. उपर्युक्त पृ.-76.

03. उपर्युक्त पृ.-वही।

04. उपर्युक्त पृ.-वही।

05. भवती सुत्र, अराधना, पृ.-1125.

06. प्रो. ऋशभ जैन वैशाली इंस्टिच्यूट रिसर्च बुलेटिन नं.-20, प्राकृत, जैन-शास्त्र और अहिंसा शोध-संस्थान, प्रथम संस्करण 2008 वासो कुण्ड मुजफ्फरपुर, पृ.-81.

07. उपर्युक्त पृ.-82.

08. तत्वार्थ सुत्र - 7/19.

09. तत्वार्थ सुत्र - 7/20.

10. तत्वार्थ सुत्र - 9/21.

11. तत्वार्थ सुत्र - 9/15.

12. तत्वार्थ सुत्र - 9/22.

13. तत्वार्थ सुत्र - 7/21

14. तत्वार्थ सुत्र - 7/21.

15. डॉ. सौवर सिंह यादव जैन आचार मीमांसा एवं पर्यावरण, साहित्यगार प्रकाश प्रथम संस्करण 2014 जयपूर, पृ.-102, 103.

Corresponding Author

Subhash Kumar*

Research Scholar, University of Ancient Indian, Department of History, Archeology and Culture, Lahn Mithila University, Kameshwaranagar, Darbhanga

www.ignited.in